शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

काका कालेलकर के यात्रा वृत्तांत के विभिन्न आयाम 'यात्रा का आनंद' के विशेष संदर्भ में

श्रीमती प्रीति व्यास (शोधार्थी)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत
डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे (निर्देशक)
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग
महाराजा रणजीत सिंह महाविद्यालय,
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

जब भी हम किसी स्थान की यात्रा करते है तो उस स्थान के इतिहास, जनजीवन, वस्तुओं, खूबियों एवं घटनाओं से रूबरू होने का अवसर प्राप्त होता है। यात्रा वृत्तान्तकार भी देश-विदेश के अनेक स्थानों की यात्राएं करते आये हैं तथा अपने यात्रा वर्णन में यात्रा में आए स्थान, व्यक्तियों, वस्तुओं एवं घटनाओं को रोचक एवं कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करते रहे हैं। साथ ही यात्रा वृत्तान्तकार उन यात्रा स्थानों की विभिन्न परिस्थितियों यथा सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों का भी प्रत्यक्ष एवं यथार्थ रुप में वर्णन करते आये हैं। काका कालेलकर बचपन से ही कई स्थानों की यात्रा करते रहे तथा इसी दौरान उनमें यात्रा स्थल का सूक्ष्मता से अवलोकन करने की प्रवृत्ति का उदय हो गया। अपनी इस प्रवृत्ति के कारण देश-विदेश के अनेक यात्रा स्थानों का निरीक्षण कर अपनी यात्रानुभूतियों को यात्रा वृत्तान्त के माध्यम से अभिव्यक्त किया। काका कालेलकरजी ने देश-विदेश के विभिन्न स्थानों की यात्राएँ कीं तथा अपने यात्रानुभवों एवं यात्रानुभूतियों को रोचक एवं भावात्मकरुप से 'यात्रा का आनंद' नामक पुस्तक में अभिव्यक्त किया है। इन अभिव्यक्तियों में यात्रा स्थानों की विभिन्न परिस्थितियाँ भी सम्मिलित हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में काका कालेलकर के यात्रा वृत्तान्त 'यात्रा का आनंद' में देश-विदेश के यात्रा स्थानों की प्रतिबिम्बित परिस्थितियों के विभिन्न आयामों का अवलोकन किया गया है।

प्रस्तावना

प्रत्येक साहित्य का समाज की विभिन्न स्थितियों से सरोकार होता है तथा ये स्थितियां अथवा परिस्थितियाँ साहित्य के सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। समाज की विभिन्न परिस्थितियों को उल्लेखित करने में काका कालेलकरजी का साहित्य भी महत्वपूर्ण योगदान रखता है। काका साहब के पिताजी के स्थानान्तरण कई स्थानों पर होते रहने से बचपन में ही कई स्थानों की यात्राएं करने का सौभाग्य काका कालेलकरजी को प्राप्त हुआ। उन्होंने प्रत्येक यात्रा स्थान की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों

को सरल एवं यथार्थ शब्दों में अपने यात्रा वृत्तान्त में रेखांकित किया है। काका साहब के द्वारा लिखे गये कुछ यात्रा वृत्तांत मौलिक हैं जो हिन्दी में ही लिखे गये हैं तथा कुछ यात्रा वृत्तांत गुजराती में लिखे गये हैं जिनका बाद में हिन्दी में अनुवाद हुआ है।

काका साहब के मौलिक यात्रा वृत्तांत 'सर्वोदय', 'सबकी बोली' तथा 'मंगल प्रभात' पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। इनमें से कुछ यात्रा वृत्तों का संकलन 'यात्रा का आनंद' में किया गया है। अपने यात्रानुभवों एवं यात्रानुभूतियों को रोचक एवं भावात्मक रुप से 'यात्रा का आनंद' पुस्तक में काका साहब ने अभिव्यक्त किया है। इस पुस्तक के लेखों में देश-विदेश की विभिन्न परिस्थितियों का प्रत्यक्ष एवं विस्तृत रूप में चित्रण हुआ है।

'यात्रा का आनंद' में विभिन्न आयाम

'यात्रा का आनंद' पुस्तक में काका साहब ने पाठकों को थोड़ा हिमालय का भ्रमण कराया तथा असम के पूर्व प्रदेश के साथ पश्चिम भारत का परिचय भी कराया। दक्षिण भारत के लेख भी इसमें सम्मिलित किये गये हैं। आधे से अधिक ग्रंथ उन यात्रा वृत्तांतों से भरा हुआ हैजब काका कालेलकर ने सन् 1958 में यूरोप, अमरीका की यात्रा की थी।

काका साहब ने यूरोप के द्वार पर ईजिप्ट का दर्शन किया, फिर इटली, स्विट्जरलैंड और जर्मनी की सैर की, उसके बाद ब्रुसेल्स की विश्व प्रदर्शनी में विश्व का चित्र देख कर इंग्लैंड होकर अमेरिका पहुँचे और वहाँ से जमैका, त्रिनिदाद और ब्रिटिश गियाना और डच गियाना होकर अपने देश लौटे। काका कालेलकरजी का चिंतन भारत की प्राचीन संस्कृति, उसके वर्तमान स्वरूप और भविष्य की उसकी आकांक्षाओं के प्रति दृष्टिगोचर होता है।

'यात्रा का आनंद' पुस्तक में पुराने महाराष्ट्र की खण्डहर राजधानी पैठण का वर्णन करते हुए काका साहब लिखते हैं - "पैठण में प्राचीन काल के भव्य मकानों के खण्डहर जहाँ-तहाँ देखने को मिलते हैं। मकानों की बनावट, उनकी लकड़ी, उन पर का खोद काम सभी आकर्षक और अध्ययन के योग्य है। ऐश्वर्य क्या चीज है और उसके विनाश का दृश्य कैसा होता है, यह जानने के लिए एक बार पैठण जरुर जाना चाहिए। 'प्रतिष्ठान' भी अन्त में 'अप्रतिष्ठित' हो सकता है।"[1]

ओम थानवी ने 'यात्रा का आनंद' पुस्तक की विशेषता बताते हुए लिखा है - "कर्सियांग, नीलगीरि, अजंता, सतपुड़ा, गंगोत्री आदि की भारतीय यात्राओं के साथ अफ्रीका, यूरोप, उत्तरी और दक्षिणी अमरीका आदि की कोई सौ यात्राओं का ब्योरा हमें इस पुस्तक में मिलता है - जमैका, त्रिनिदाद और ब्रिटिश गियाना तक का। लेखक की जिज्ञासु वृत्ति इन संस्मरणों की विशेषता है और जानकारी साझा करने की ललक भी। विदेश में अक्सर वो बाहर की प्रगति की तुलना में भारतीय संस्कृति की निरंतरता को याद करते हैं।"[2]

बचपन में उनके द्वारा की गई यात्राओं ने उन्हें प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण में पारंगत तो बना ही दिया था, साथ ही वे प्रकृति प्रेमी भी हो गये थे। यात्रा का आनंद पुस्तक के मुख्य पृष्ठ पर काका कालेलकर ने बताया है कि ईश्वर की प्राकृतिक रचनाएं जैसे कि बादल, पहाड़, नदियां, सरोवर, समुद्र, विशाल जंगल, पक्षी, वन्य पशु, सूर्योदय, सूर्यास्त आदि स्वतः ही मनुष्य को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। वे कहते थे कि जलचर सृष्टि की अपनी ही एक अलग और लुभावनी दुनिया है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'यात्रा का आनंद' में प्रतिबिम्बित सामाजिक परिस्थितियाँ

काका कालेलकरजी ने विभिन्न स्थानों के समाज तथा सामाजिक जीवन का प्रत्यक्ष एवं विस्तृत वर्णन किया है। महाराष्ट्र के पैठण में सभी समाज के लोग फले-फूले, इसी का वर्णन करते हुए काका कालेलकरजी ने लिखा है - "जो स्थान बहुत दिनों तक राजधानी के तौर पर पनपता गया, वहाँ बुनकर, सुनार, गवैये और पंडित जमा होने वाले ही थे। इस प्रकार पैठण संस्कृति का एक जबरदस्त केन्द्र बन गया।"[3]

असम के जनजीवन पर भी प्रकाश डालते हुए काका कालेलकर ने लिखा है, "असमिया लोग परम्परा से खेती करने वाले है। किन्तु पूर्व बंगाल के मैमनसिंह जिले से जो लाखों मुसलमान असम प्रान्त में आकर बसने लगे हैं, उनकी जीवन-शक्ति के सामने यहाँ के स्थायी लोग फीके पड़ जाते हैं। ये नये लोग गाय रखते हैं, आलू बोते हैं, साग-तरकारी बेचते हैं और यहाँ की उपजाऊ जमीन के अनुरूप मेहनत-मजदूरी करके लाखों रुपया कमाते हैं।"[4] असम प्रांत के बारे में कई और महत्वपूर्ण जानकारी काका साहब ने इस यात्रा ग्रंथ में दी है। असम प्रांत में मिट्टी के तेल और कोयले की खान निकलने तथा चाय के बागानों के कारण अन्य स्थानों से मजदूर लाये गये। ये सभी मजदूर कड़ी मेहनत तो करते थे परन्तु यहाँ के लोगों के साथ घुलमिल नहीं पाये। असम प्रांत में गायें, भैंसें, हाथी, हिरण, गैंडे आदि वन्य पशु हैं। नारियल, सुपारी, केले, काजू, आम, कोकम आदि पेड़ों से भरपूर इस क्षेत्र की प्राकृतिक शोभा देखी जा सकती है।

काका साहब ने अफ्रीका की सामाजिक स्थिति का वर्णन भी 'यात्रा का आनंद' कृति में किया है। इसके अनुसार पश्चिमी अफ्रीका में मलेरिया, स्लीपिंग, सिकनेस आदि अनेक बीमारियाँ फैली हुई थीं। यहाँ पर जानवर कम थे, जिससे कि दूध मिलना मुश्किल था। खेती के लिए भी यंत्र ही चलाने पड़ते थे। पश्चिमी अफ्रीका में कुछ सिंधी भाई जगह-जगह फैले हुए थे, जो अपने व्यवसाय के माध्यम से वहाँ के लोगों की अच्छे से सेवा कर रहे थे।

यूरोप में काका साहब लगभग 40 दिन घूमे और यहाँ के समाज की विशेषताओं को बताते हुए अपने ग्रंथ में लिखा कि स्विट्जरलैंड की जनता का आदर्श कुछ हद तक ऊँचा है। फ्रांस की जनता कुछ ढीली है, लेकिन विज्ञान एवं कला दोनों क्षेत्रों में इनका नेतृत्व काफी ऊँचा है। स्विट्जरलैंड की सामाजिक स्थिति के बारे में उन्होंने बताया कि यहाँ की जनता मांस का कम उपयोग करती है तथा दूध, मक्खन, पनीर आदि चीजों का उपयोग खाने में करती है। यूरोप की जनता शरीर से सुदृढ़ है तथा जीवन जीने के लिए उत्साही है। उनके अनुसार लंदन की जनता की जीवन-शक्ति उच्च दरजे की है तथा यह होशियार और काबिल है।

जापान यात्रा का वर्णन करते हुए उन्होंने वहां की सामाजिक स्थिति का वर्णन इस तरह किया है, "जापान की जनता संयमी होती है। वे अपने चित्त पर विजय हासिल कर चुके हैं। मन में ज्वालामुखी सुलगने पर भी वे अपने चेहरे पर शांति और प्रसन्नता रखते हैं। इस कला में बच्चे भी निपुण होते हैं।"[5] सर्वविदित है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जापान के हिरोशिमा शहर में प्रलयंकारी विनाश हुआ था जिसमें पूरा शहर तहस-नहस हो गया था तथा लाखों लोगों की जाने उसमें चली गई थी। इस विनाश में कुछ सैकड़ो लोग ही बच पाये थे, परन्तु इस विनाश

को नौ-दस साल की अवधि में ही पुनः बसा दिया गया। इस तरह हम कह सकते हैं कि जापान के नागरिक बहुत मेहनती होते हैं।

अमेरिका के यात्रा वर्णन को काका साहब ने अपने यात्रा ग्रंथ में स्थान दिया है, जिसमें उत्तर तथा दक्षिण अमेरिका में बसे हुए भारतीयों की सामाजिक स्थिति को इस तरह बताया है, "ये लोग जहाँ बसे है, उस सारे प्रदेश में गोरों की संख्या बहुत कम है। इन लोगों की हिन्दी तो बहुतों की छूट गई है घर पर भी बहुत से लोग शुद्ध या अशुद्ध अंग्रेजी में बोलते हैं। प्राथमिक शिक्षा सरकार की ओर से अंग्रजी के द्वारा ही दी जा सकती है। ऐसी हालत में व्यवहारवादी लोग भारतीय संस्कृति के प्रति हृदय की गहराई में रहे हुए प्रेम के कारण ऐसा अंग्रेजी साहित्य पढ़ते हैं, जिसमें भारत का इतिहास, भारत का तत्वज्ञान, भारत के रस्मरिवाज, त्यौहार, भारत की चित्रकला, स्थापत्य और मूर्तिकला, भारत का संगीत ये सब बातें व्यक्त हुई हों।"[6]

अमेरिका में रहने वाले भारतीय आजीविका प्राप्त करने के साथ-साथ आर्यसमाजी और सनातनी मतभेदों की चर्चा में मशगूल रहते हैं। अपने यात्रा वर्णन में काका साहब विभिन्न देशों की सामाजिक स्थितियों की तुलना भी करते रहे हैं। पश्चिमी अफ्रीका में संपत्ति के बंटवारे के संबंध में काका साहब लिखते हैं, "एक खूबी की बात मैने वहाँ पर देखी। जिस तरह हमारे देश में केरल की ओर पिता की संपत्ति उसके पुत्र को न मिलकर उसकी बहन के लड़के को मिलती है, उसी तरह पश्चिमी अफ्रीका में भी कुछ अधिकार लड़के के पास न जाते हुए बहन के लड़के के पास जाते हैं।"[7]

इस वर्णन में स्त्री-स्वतंत्रता का स्वाभाविक परिणाम परिलक्षित होता है। उनके वर्णन में अफ्रीका में काले--गोरे का भेदभाव भी दृष्टिगोचर हुआ है। इस वर्ण-विद्वेष के कारण अफ्रीकन लोगों को अपने ही देश में अन्याय का सामना करना पड़ा है।

'यात्रा का आनंद' में प्रतिबिम्बित धार्मिक परिस्थितियां

एलापुर, एल्लूर या बेरुल जिसे अँग्रेजी में एलोरा कहने लगे हैं। एलोरा एक गाँव है, जहाँ की गुफाओं में बौद्ध, शैव और जैन इन तीन पंथों से संबंधित मूर्तियाँ गुफाओं में देखने को मिलती हैं। इसी का वर्णन काका साहब ने अपने यात्रा ग्रंथ में देकर वहाँ ही धार्मिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लिखा है "कैलास की गुफा में अनेक जगह रावण अपनी बीस भुजाओं पर कैलास को उठाता है और ऊपर शिव-पार्वती तथा नन्दी विराजमान हैं, ऐसे प्रसंग खुदे हुए हैं। मुख्य शिवमंदिर छोटा नहीं है। यह सारा मंदिर उसके आसपास के असारे और उसके अन्दर एक तरफ खुदा हुआ दूसरा मंदिर, यह सब देखकर शिल्पकार की कल्पना शक्ति के साहस से चित्त दंग रह जाता है। मंदिर के दोनों तरफ दो हाथी और दो विजय स्तंभ हैं।"[8]

कैलास की गुफा के बाद जैनों की इन्द्रसभा है। इसमें एक तरफ एक ही हाथी है और दूसरी तरफ जो एक विजय स्तम्भ था, वह तीन टुकडे. होकर जमीन पर पड़ा हुआ है। यह गुफा कैलास का ही छोटा-सा संस्करण है। 19 नम्बर की गुफा हमारा ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट करती है। भव्यता में दूसरी किसी भी गुफा से यह कम नहीं है। इसे देखते ही बम्बई के पासवाली धारापुरी याने 'एलिफैंटा केव्स' याद आये बिना नहीं रहती। सिंह की मूर्तियाँ असाधारण ऊँची और बड़ी हैं। आखिर की जैन गुफाएँ, बीच की शैव गुफाएँ और दाहिने

छोर पर बनी हुई बौद्ध गुफाएँ आदि कुल इतना विस्तार है कि मनुष्य थक जाता है। ये जानकारियां भी काका साहब द्वारा उनके यात्रा ग्रंथ के माध्यम से दी गई हैं। इस प्रकार से शैव, बौद्ध और जैन तीन पंथों का समन्वय इन गुफाओं में देखा जा सकता है।

दक्षिण भारत के पश्चिम किनारे पर महाराष्ट्र और कर्नाटक के बीच गोवा एक छोटा-सा प्रदेश है। गोवा की धार्मिक स्थिति पर काका साहब ने अपने यात्रा ग्रंथ में इस तरह लिखा है, "फ्रांसीसियों ने इस देश में दरबारी राजनीति चलाई। अंग्रेजों ने व्यापारी राजनीति से बहुत कुछ लाभ उठाया किन्तु पुर्तगीज लोगों ने धर्म और संस्कृति की दृष्टि से यहाँ की प्रजा को आत्मसात् करने की नीति चलाई। जहाँ तक उनका चला पुर्तगीज लोगों ने इस देश में केवल एक ईसाई धर्म ही प्रचलित करने की कोशिश की। विशिष्ट भागों में मंदिर या मस्जिद टिकनी ही नहीं चाहिए ऐसे भी नियम किये और उनका कठोरता से पालन करवाया।"[9]

इस प्रकार इस यात्रा वर्णन से पता चलता है कि गोवा में आधी जनता ईसाई है, किन्तु आधी जनता दृढ़तापूर्वक कट्टर हिन्दू ही बनी रही है।

काका कालेलकरजी के द्वारा विदेश के कई अन्य स्थानों की भी यात्राएँ की गई। वे चीन की राजधानी पेकिंग भी गये तथा वहाँ की धार्मिक परिस्थिति का वर्णन उन्होंने अपने यात्रा ग्रंथ में इस प्रकार किया, "आज हम एक बौद्ध मंदिर देख आये। एक मंदिर के पीछे दूसरा, उसके पीछे तीसरा और उसके पीछे चौथा। आखरी मन्दिर में तिब्बत की बौद्ध एनसाइक्लोपिडिया बंजूर की पोथियाँ थीं, जिन्हें हमने सिक्कीम के महाराज के गोम्था में देखा था। इस मंदिर की मैत्रेयी बुद्ध की मूर्ति पूरी साठ फुट ऊँची होगी।"[10]

यहाँ के बौद्ध मंदिर तथा वहाँ स्थित बुद्ध भगवान की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। यहाँ के समाज पर बौद्ध धर्म का प्रभाव दिखता है।

'यात्रा का आनंद' में प्रतिबिम्बित राजनीतिक परिस्थितियाँ

काका साहब ने अपने यात्रा वृत्तांत में गोवा की झाँकी प्रस्तुत करते हुए वहाँ की राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश कुछ इस तरह डाला है, "गोवा में आज तानाशाही का राज है। अगर सरकार को ख्याल हुआ कि किसी आदमी का आन्दोलन, वह चाहे जितना शुद्ध हो, राज्य के खिलाफ है, तो वह उसे गिरफ्तार करके अफ्रीका के किसी उपनिवेश में, चाहे जितने दिनों के लिए निर्वासित कर सकती है। ऐसी बुरी दशा के कारण वहाँ की जनता दिल खोल कर बोल नहीं सकती। इन दमनकारी कानूनों से राजसत्ता का और जनता का चारित्र्य तो बिगड़ ही जाता है, किन्तु स्वातंत्र्य-लालसा कभी मर नहीं पाती।"[11] इस तरह से यह ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता से पूर्व गोवा में तानशाही राज चलता था।

काका कालेलकर ने विदेशों के कई स्थानों की यात्राएं की हैं। उनका वर्णन भी उन्होंने अपने यात्रा ग्रंथ में किया है। अफ्रीका वर्णन में उन्होंने वहाँ की राजनीतिक स्थिति को इस प्रकार लिखा है, "अफ्रीका खंड है। वहाँ के काले अफ्रिकन लोगों पर पाँच छोटे-बड़े पश्चिम के देशों का राज चलता है। अफ्रिकन लोग स्वतन्त्र बनना चाहते हैं और योरप के लोग अपना राज यहाँ कायम रखना चाहते हैं और वैसा करने के लिए वहाँ के लोगों की निन्दा भी करते हैं। अफ्रिकन लोगों को अपने ही देश में अछूत होकर रहना पड़ता है।"[12]

इजिप्ट देश की राजनीतिक स्थिति का वर्णन भी उन्होंने अपने यात्रा ग्रंथ में किया है। वे लिखते

हैं, "यहाँ की सरकार ने एक बढ़िया नीति चलाई है। आर्थिक स्थिति में चाहे जो बदल हो, तो भी गरीबों की रोटी की कीमत ओर मोटे कपड़े की कीमत न बढ़े, ऐसी व्यवस्था सरकार ने की है, इसलिए आम जनता सरकार से खुश है और राज्य मजबूत है।"[13]

इस तरह इस देश की नीति को बताया गया है, जिसमें गरीब वर्ग का ध्यान रखते हुए उनकी रोटी और कपड़ों की कीमत को कम रखते हुए बढ़ाया नहीं जाता है ताकि गरीब वर्ग भूखा न रहे। काका साहब ने यह भी बताया कि पूर्व अफ्रीका में रहने वाले भारतीयों ने अपने राजनीतिक अधिकारों की रक्षा के लिए जगह-जगह इण्डियन एसोसियेशनों की स्थापना की। अन्य कुछ लोगों को इस इण्डियन शब्द से एतराज होता है। यह अंधापन इस हद तक पहुँच गया है कि पक्षाभिमानी लोगों की जिद है कि जिस तरह हिन्दुस्तान के टुकड़े हुए उसी तरह इण्डियन एसोसियेशनों के भी टुकड़े होने चाहिए।

'यात्रा का आनंद' में प्रतिबिम्बित आर्थिक परिस्थितियाँ

काका साहब ने विभिन्न देशों की अर्थ व्यवस्थाओं का भी अवलोकन किया तथा अपने यात्रा ग्रंथ मे जयपुर के पास स्थित सांगानेर के एक प्राचीन उद्योग 'छीपा-काम' के सम्बन्ध में लिखा, "साँगानेर में हमने एक प्राचीन उद्योग देखा जिसे गुजरात में 'छीपा-काम' कहते हैं। कपड़े पर तरह-तरह की बेल-पत्तियाँ और चित्र के छापे बनाकर उनकी छाप से कपड़ों को सुशोभित करना और रंग-रंग की आकृतियाँ छापकर कला अभिरुचि को तृप्त करना - यह है मनुष्य का सनातन व्यापार। यह काम भी साँगानेर में देखकर बड़ी खुशी हुई।"[14]

इस तरह विदित होता है कि साँगानेर में कपड़ों पर छीपा-काम करके कपड़ों का व्यापार किया जाता रहा है। यात्रा वर्णन में यह पता चलता है कि साँगानेर में कागजी परिवार बहुत थे लेकिन प्रोत्साहन के अभाव में धंधा टूट जाने से वे सब तितर-बितर हो गये। "गांधीजी हाथ-कागज के उपयोग को बहुत महत्व देते थे तथा उसके उपयोग का प्रचार-प्रसार भी करते थे। गांधीजी का हाथ-कागज का यही प्रेम जयपुर तक भी पहुँचा और साँगानेर में खादी का काम करने वाले भी हाथ कागज के नोट-पेपर का कार्य अपने जीवन-यापन के लिये करने लगे थे।

पैठण के व्यवसाय और पैठण का कौन-कौन स्थान से व्यापारिक संबंध था, इसका काका साहब ने अपने यात्रा ग्रंथ में वर्णन इस तरह किया है, "पैठण जो कि पुराने महाराष्ट्र की खण्डर राजधानी है, वहाँ पर बुनकर सुनार गवैये और पंडित सभी थे, ये सभी अपने-अपने व्यवसाय से आजीविका चला रहे थे। पैठण का सोपारा, भृगुकच्छ आदि पश्चिम किनारे के बन्दरगाहों के साथ व्यापार जारी हुआ।"[15]

काका साहब के द्वारा विदेश के कई स्थानों की यात्राएँ की गई तथा वहाँ की आर्थिक स्थिति को भी अपने यात्रा ग्रंथों में लिखा है। काहिरा की आर्थिक स्थिति को इस तरह लिखा है, "नाइल नदी यहाँ ही प्रजा को अन्न के अलावा अच्छे से अच्छे लम्बे रेशे वाली कपास देती है। इसलिए धान्य और धन दोनों की बहुतायत हो सकती है।"[16]

इस प्रकार काका कालेलकरजी ने काहिरा के आर्थिक रूप से समृद्ध होने में अन्न और कपास की पैदावर को महत्वपूर्ण माना है।

दक्षिण त्रिनिदाद की आर्थिक स्थिति का वर्णन काका साहब ने अपने यात्रा वृत्तांत में इस तरह

दिया है - "दक्षिण त्रिनिदाद में कोलतार का सरोवर है। यह तालाब एक बड़ा चमत्कार माना जाता है। तालाब पर मोटर भी कुछ अन्तर तक चला सकते हैं। सैकड़ों वर्ष बीते - सर वॉल्टर रेले के समय से आजतक लोग इस तालाब में से कोलतार खोद निकालते आये हैं। आठ दिन के भीतर अन्दर से नया कोलतार आ जाता है और गड़ढा भर जाता है। तालाब में से कोलतार खोद निकालकर, बड़ी-बड़ी कड़ाहियों में भरकर, तार विभाग की रस्सियों जैसी रस्सियों पर से जहाज तक ले जाते हैं और बाद में गरम करके उसका शुद्ध कोलतार बनाया जाता है।"[17]

त्रिनिदाद से कोलतार अनेक स्थानों पर भेजा जाता रहा है, जो त्रिनिदाद की अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ करने में मददगार है और वहां के लोगों के जीवन-यापन का एक मजबूत साधन है। लंदन, न्यूयार्क, वाशिंगटन जैसे बडे-बड़े शहरों के आस्फाल्ट के रास्ते इस सरोवर के कोलतार की मदद से ही बने हुए हैं।

'यात्रा का आनंद' में प्रतिबिम्बित साहित्यिक परिस्थितियां

सिन्ध और पंजाब प्रान्त हिन्दुस्तान के महाद्वार हैं। हमारे देश पर जो भी आक्रमण हुए हैं, उनमें से अधिकतर सिन्ध और पंजाब के रास्ते से ही हुए हैं। काका साहब ने अपने यात्रा ग्रंथ में सिंध यात्रा का वर्णन किया है एवं यह यात्रा वर्णन उनके द्वारा तब लिखा गया था जबकि सिंध प्रांत भारत में ही था।

सिंध प्रांत की साहित्यिक परिस्थिति का वर्णन करते हुए काका कालेलकरजी ने लिखा है "प्राचीन काल से साहित्य निर्माण का भार जिस पर था, वह ब्राह्मण वर्ग तो, सिकन्दर ने जब उसका कत्ल किया तब से शायद अपना सिर ऊँचा नहीं कर सका है। जो कुछ साहित्य आज मिलता है, वह हिन्दू और मुसलमान संतों का और सूफियों का लिखा हुआ है। और बनिये तो अपने हिसाब-किताब के बाहर कुछ लिखते ही नहीं थे।

सिन्ध में अंग्रेजी शिक्षा का प्रारंभ हुआ, उसके बाद से साहित्य में कुछ विविधता तो आई है सही, लेकिन सिन्ध के विद्वानों ने प्रांतीय संस्कृति की सेवा करने का कोई विशेष प्रयत्न किया ही नहीं।"[18] इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि इस स्थान पर साहित्य में विविधता के बावजूद भी साहित्य के क्षेत्र में विशेष उन्नति नहीं हुई है।

यात्रा का आनंद पुस्तक में 'युद्ध-विरोधी पहला सम्राट' के अन्तर्गत काका साहब ने देहरादून के कन्या-गुरुकुल की जानकारी देते हुए बताया कि उन्होंने कात्सु होरिउचि नाम की जापानी लड़की को इस गुरुकुल में हिन्दी पढ़ने भेजा था। इस वर्णन में यहाँ के देववाणी-सम्मेलन और गुरुकुल की छात्राओं के संस्कृत-व्याख्यान की जानकारी भी प्राप्त होती है। काका साहब ने यह भी बताया है कि विदेशी विश्वविद्यालयों में लैटिन भाषा के उपयोग के लिये विशेष प्रोत्साहन दिया जाता था, उसी प्रकार हमारे देश में भी बनारस, महाराष्ट्र के बाई और अन्य स्थानों में संस्कृत में शास्त्रार्थ के लिये प्रोत्साहित किया जाता रहा है। केरल में भी लड़कियाँ संस्कृत में अस्खलित व्याख्यान देती रही हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि काका कालेलकरजी ने यात्रा स्थानों की विभिन्न परिस्थितियों को अपने वृत्तान्त कौशल के माध्यम से उजागर किया है। देश-विदेश के विभिन्न स्थानों की सामाजिक, धार्मिक,

राजनीतिक, आर्थिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों से अवगत कराने में काका कालेलकरजी के यात्रा साहित्य का उल्लेखनीय योगदान है। 'यात्रा का आनंद' काका साहब की एक उल्लेखनीय कृति है जिसमें उन्होंने अपने यात्रानुभवों एवं यात्रानुभूतियों के माध्यम से यात्रा स्थलों की विभिन्न परिस्थितियों को रोचक एवं भावात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

काका कालेलकरजी ने हिमालय, असम से लेकर दक्षिण तक के स्थानों की प्राचीन संस्कृति, उसके वर्तमान स्वरूप और भविष्य की उसकी आकांक्षाओं के प्रति चिंतन व्यक्त किया है। 'यात्रा का आनंद' पुस्तक में काका साहब का चिंतन एवं विद्वत्ता विशेष रूप से उभर कर आई है। उनके यात्रा संस्मरणों में सर्वत्र उनके जीवन दर्शन की भी झांकी मिलती है। उनकी सशक्त लेखन शैली के कारण उनके यात्रा वृत्त सजीव एवं चित्रमय बन गये हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 9
2 थानवी ओम, संपादक, जनसत्ता
3 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 7
4 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 29
5 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 237
6 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 246
7 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 219
8 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 25,26
9 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 34
10 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 100,101
11 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 39
12 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 222,223
13 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 269
14 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 177
15 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 7
16 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 269
17 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 348,349
18 काका कालेलकर, यात्रा का आनंद, पृष्ठ 53